ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

सृजनात्मकता
Creativity

Paper Submission: 15/07/2021, Date of Acceptance: 23/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

रमेश कुमार प्रजापति
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग,
एमजीकेवीपी, वाराणसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

सृजनात्मकता व्यक्ति की वह शक्ति है जो उसे आगे बढ़ाने में सहायता करती है यह मानव की वह गुणात्मक कल्पनाभक्ति है जो जीवन में नयी तथा अच्छी चीजों को लाने में सहायता होती है यह व्यक्ति का निजी विशेष गुण है जो उसे अन्य व्यक्तियों से पृथक करता हैए चाहे कोई भी रास्ता हो व्यक्ति के जीवन में सृजनात्मकता के प्रभाव के बिना कोई व्यक्ति की महानताए उत्कृष्ठता एवं पूर्णता नहीं है। सृजनात्मकता ऐसा तत्व है जिनके परिणाम स्वरूप व्यक्ति की उपलब्धिए अभिप्रेरणा, व्यक्तित्व आदि प्रभावित होता है।

Creativity is that power of a person which helps him to move forward, it is that qualitative imagination of human which helps in bringing new and good things in life. No matter what the path, there is no greatness, excellence and perfection of a person without the influence of creativity in one's life. Creativity is such a factor as a result of which the achievement, motivation, personality etc. of a person are affected.

मुख्य शब्द : सृजनात्मकता, वैज्ञानिक, तकनीकि, औद्योगिक विकास।
Keywords: Creativity, Scientific, Technological, Industrial Development.

प्रस्तावना

वैज्ञानिक, तकनीकि तथा औद्योगिक विकास के आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत नित–प्रतिदिन नये आविष्कार हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश अविष्कारों के पीछे जहाँ वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम छुपा हुआ है। वही उनका सृजनात्मकता का योगदान कम नहीं है। पहले यह माना जाता था कि केवल कवि, चित्रकार, संगीतकार आदि व्यक्ति, ही सृजनात्मक होते हैं परंतु अब यह माना जाने लगा कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता पाई जाती है। किसी व्यक्ति में इसकी मात्रा किसी में अधिक। मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए, नवीन अविष्कार करने तथा समस्याओं का समाधान खोजने के कार्य में सृजनात्मक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत 'सृजनात्मकता' प्रत्यय. पर मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने विशेष ध्यान दिया। वर्तमान समय में तीव्र गति से हो रहे वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक प्रगति व विकास तथा आधुनिकीकरण ने मानव जीवन को इतना जटिल तथा समस्याग्रस्त बना दिया है, कि इन समस्याओं के समाधान के लिए जीवन 'प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। आज के समस्या ग्रस्त, जटिल तथा प्रतियोगिता पूर्ण संसार में सृजनात्मक व्यक्तियों की अत्यंत माँग है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों को अधिकाधिक अर्जित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सृजनात्मक व्यक्तियों को खोजना एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गयी है।

अनुसंधान में सृजनात्मकता शब्द का अर्थ आजकल हटकर मनुष्य के कार्य करने के स्तर से लगाया जाता है। निःसदेह मानव अद्भूत शक्तियों से संपन्न है। उसकी सभी शक्तियों में सृजनात्मकता अत्यधिक अद्वितीय है। हम में से हर एक सृजनात्मकता का थोड़ा बहुत प्रयोग कर पाता है इसे ही 'प्रतिभा' नाम से जाना जाता है। मानव बुद्धि द्वारा उत्पन्न मूल विचारों को ही सृजनात्मकता की संज्ञा दी गई है।

सृजनात्मकता का अर्थ

चुनौती स्वीकार करने की क्षमता, विकल्प का उपयोग करने की स्वतंत्रता, स्वयं को बदलने की तत्परता और वातावरण को बदलने की क्षमता। एक सृजनात्मकता व्यक्ति बिना–सोचे विचारे किसी का अनुकरण नहीं करता और उसका पूर्ण विरोध करता है।

भिन्न–भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता को भिन्न–भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत सृजनात्मकता की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नवत है;

डीहान तथा हेविंगहर्स्ट के अनुसार – "सृजनात्मकता वह विशेषता है। जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करे। यह नवीन वस्तु संपूर्ण समांज के लिए नवीन हो सकती है अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया है।"

ड्रैवलल के अनुसार – "सूजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार– "सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की एक मानसिक प्रक्रिया है।"

सृजनात्मकता के तत्व

सृजनात्मकता की परिभाषाओं के अवलोकन तथा विश्लेषण से ज्ञात है कि सृजनात्मकता को संवेदनशील, जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता, लचीलापन, प्रवाह विस्तृतता, नवीनता आदि के संदर्भ में समझा जा सकता है। सृजनात्मकता के चार प्रमुख तत्व निम्नवत् हैं;

प्रवाह (Fluency)

प्रवाह से तात्पर्य किसी भी दी गई समस्या पर अधिकाधिक विचारों या प्रत्युत्तरों को प्रस्तुत करने से है। प्रवाह को पुनः चार भागों–वैचारिक प्रवाह, अभिव्यक्ति प्रवाह साहचर्य प्रवाह शब्द प्रवाह में बाँटा जा सकता है। किसी व्यक्ति के द्वारा किसी सृजनशील परीक्षण के किसी पद पर प्रवाह को प्रायः उस पद पर दिए गए प्रत्युत्तरों की संख्या से व्यक्त किया जा जाता है।

विविधता (Flexiblity)

विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिए प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विविधता के होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गए विकल्प या उत्तर एक दूसरे से कितने भिन्न–भिन्न है। विविधता की तीन आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता, आकृत्ति अनुकूल विविधता तथा शांब्दिक स्वतः स्फूर्त विविधता, हो सकती है। सृजनात्मकता के परीक्षणों के किसी पद पर विविधता को प्रायः उस पद पर व्यक्ति के द्वारा दिए गए प्रत्युत्तरों के प्रकार की संख्या से व्यक्त, किया जाता है।

मौलिकता (Originality)

मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गए विकल्पों या उत्तरों का असामान्य अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से भिन्न होने से है। इसमें देखा जाता है कि व्यक्ति द्वारा दिए गए विकल्प या उत्तर सामान्य या प्रचलित विकल्पों या उत्तरों से कितने भिन्न हैं।

विस्तारण (Elaboration)

विस्तारण से तात्पर्य दिए गए विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या, व्यापक, पूर्ति या गहन प्रस्तुतीकरण से होता है। विस्तारण को दो भागों–शाब्दिक विस्तारण तथा आवृत्ति विस्तारण में बाँटा जा सकता है।

सृजनात्मकता की प्रकृति

सृजनात्मकता के स्वरूप, प्रकृति तथा औचित्य को स्पष्ट करने के किसी पूर्ण सन्तोषजनक तथा सर्वमान्य सिद्धांत को अभी तक प्रस्तुत नहीं किया जा सका है, फिर भी अनेक मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता के सिद्धांतों, विशेषताओं तथा स्वरूप को अपने–अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

1. सृजनात्मकता के पुराने सिद्धांत के अनुसार – सृजनात्मकता को ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक उपहार माना जाता है इस सिद्धांतानुसार जो व्यक्ति ईश्वरीय शक्ति का जितना अधिक कृपापात्र होता है वह उतना ही अधिक सृजनात्मकता होता है।
2. योग्यता अथवा मानसिक शक्ति है जो व्यक्ति को प्रकृतिजन्य रूप में जन्म के सम सृजनात्मकता के जन्मजात सिद्धांत के अनुसार – सूजनात्मकता एक जन्मजात संज्ञानात्मक प्राप्त होती है।
3. वातावरणजन्य सृजनात्मकता के सिद्धांत के अनुसार– सृजनात्मकता एक अर्जित तथा. वातावरणंजन्य योग्यता है वियुक्त, प्रजातांत्रिक, तथा उत्साहपूर्वक वातावरण से सृजनात्मकता का विकास होता है।
4. मनोविश्लेषण सिद्धांत के अनुसार – सृजनात्मकता वास्तव में संवेगात्मक शोधन का साधन तथा परिणाम होती है। फ्रायड के अनुसार सृजनात्मक व्यक्तियों की सृजनात्मकता वस्तुतः उनकी मुख्यतः काम क्रिया संबंधी द्रविण, इच्छाओं की प्रकारान्तर अभिव्यक्ति होती है।

सृजनात्मक शिक्षण

विकास के जुलूस में पूर्ण सम्मिलित महान सांस्कृतिक विरासत और आदिम मौलिक, गंभीर व महत्वपूर्ण विषयों पर विचार करने का सामर्थ्य एवं विद्वता की परंपरा जैसे बिन्दुओं को दोहराती कीर्ति प्राप्त करने की भारत कठिन कोशिश कर रहा है। सर्वोच्च स्थिति पर बहुत देर तक साधारणता से भारत अस्तित्व में नहीं बना रह सकता है। इसलिए उच्च बुद्धिजीवी और सृजनात्मक व्यक्तियों को जीने के लिए ऐसे ही वातावरण की आवश्यकता के साथ अपनी शक्ति को कभी भी, कहीं भी, कैसे भी पहचानने का गुण होना चाहिए। नगण्य व्यक्ति भी कार्य कर अपने इस वातावरण में पहचान, विद्वता और सीखने के बिना प्राप्त कर सकता है। अगर यह सत्य नहीं होता तो टैगोर, रामानुजन, आइंस्टीन और फायड आदि इनमें से, किसी पर भी कोई ध्यान नहीं दे पाता। यह सब इन्हीं व्यक्तियों के साथ ही नहीं बल्कि उन कुछ व्यक्तियों को भी, कहीं भी अपने विचारों को पूरी तरह समझना और गहराई से पहचानने की महत्वपूर्णता को जानना पड़ा है। इन्हीं अद्भूत व्यक्तियों के द्वारा समाज के अंतर्गत खोज और क्षमताओं का उपयोग कर कई महत्वपूर्ण कार्य किये गए हैं।

वातावरण जनिक, बुद्धिजीविक, व्यक्तित्व घटकों के द्वारा बच्चों का शैक्षणिक विकास प्रभावित हो रहा है। पर्यावरणीय घटकों में विद्यालयों में, घरों में सुविधाएँ, विद्यालय में पर्यावरण, पढ़ाने के तरीके तथा पढ़ाने के तरीकों को लेकर शिक्षकों का दृष्टिकोण आदि शामिल हैं। शिक्षण की सफलता को प्राप्त करना व उसके लक्ष्यों

को हासिल करना शिक्षकों के प्रभावशाली होने पर निर्भर करता है। उसकी गुणवत्ता का सवाल और प्रासंगिकता इसके प्रभावी तरीके हैं। शिक्षा की भूमिका भारत जैसे विकासशील देशों में अधिक महत्वपूर्ण है। एक शिक्षक की यह जिम्मेदारी है कि वह एक सही तरीके से सीखने का माहौल पैदा करे लोगों की क्षमता व रूचि के अनुसार उनकी आवश्यकताओं को समझे।

एक शिक्षक के महत्वपूर्ण कार्य हैं, सीखने की सुविधा प्राप्त करना। एक शिक्षक नये विचारों और सीखने की प्रक्रिया के माध्यम को अनुकूल बनाने का कार्य करता है। हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी के अनुसार, "एक सामान्य शिक्षक कहता है, एक अच्छा शिक्षक व्याख्या करता है, एक उच्च कोटि शिक्षक ज्ञान का प्रदर्शन करता है और एक अति विशिष्ट शिक्षक सीखने को प्रेरित करता है।"

अध्ययन का उद्देश्य

शिक्षक एक अंतः क्रिया है जिसमें विचारों, जानकारी, निरीक्षण तथा दृष्टिकोण का शिक्षक एवं अधिगमकर्ता अभिव्यक्ति के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। महान शिक्षक अपने साधन की औपचारिक अभिव्यक्ति के साथ ऐसे वैकल्पिक माध्यमों को अपनाता है जो बच्चों में स्वंतत्र विश्लेषण की इच्छा उत्तेजित करता है।

निष्कर्ष

दुर्भाग्यवश, आज के समय में हमारे विद्यालयों में, "शिक्षण का अर्थ–बोलना' और सीखने का आशय 'सुनना' रह गया है। बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में केवल एक अच्छा श्रोता बनना सीखते हैं, और माध्यमिक विद्यालयों में प्रभावी तरीके से नोट्स बनाना सीखते हैं ताकि वे महाविद्यालयों में सफल हो सकें। अतः अधिगमकर्ता को मुख्य रूप से शिक्षक द्वारा दिये जाने वाला ज्ञान को सोखने वाला स्पंज माना जाता है। इसलिए शिक्षण और अधिगम, अधिगमकर्ता के विकासात्मक प्रकृति पर आधारित होना चाहिए और यह तभी संभव है जब शिक्षक की अभिवृत्ति सृजनात्मक हो और वह इस सूजनात्मकता को अपने छात्रों में विकसित करनें की कोशिश करता हो। शिक्षक का दायित्व न केवल ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि ज्ञान अर्जित करने की इच्छा उत्पन्न करना भी है शिक्षण युवाओं में सृजनात्मक उद्दीप्रन का एक शक्तिशाली माध्यम है।

अपवाद के लिए, किसी कार्य के निस्पादन में बुद्धिमता ही नहीं वरन सृजनात्मक एवं मौलिकता भी आवश्यक है। अतः शिक्षण में सृजनात्मकता शिक्षण पर बल देना चाहिए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मंगल, एस0के0, शिक्षण अधिगम और मनोविज्ञान*
2. *पाल, हंसराज, प्रगति शिक्षा–मनोविज्ञान।*
3. *शर्मा प्रभा, शिक्षा मनोविज्ञान।*
4. *पचौरी, गिरीश, शिक्षण और अधिगम का विकास।*
5. *मेहंदी वी0, बच्चों की सृजनात्मकता में सामाजिक मनोविज्ञान कारक शीर्षक पर अध्ययन।*
6. *मुहम्मद सुलेमान मनोविज्ञान शिक्षा एंव अन्य सामाजिक विज्ञानों मे सांख्यिकी।*